DR. RAMENDRA KUMAR SINGH
P. G. Dept. of Psychology
Maharaja College, Ara.

B. A - III Psychology Hons.
Paper — V th

समाजीकरण (Socialization)

Scanned by CamScanner

समाजीकरण (Socialization)

जब शिशु जन्म लेता है, उस समय न तो वह सामाजिक होता है और न ही वह असामाजिक होता है बल्कि वह जैविक गुणों का प्राणी होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा वह सामाजिकता को ग्रहण करता है। समाजीकरण एक जटिल - प्रत्यय है, जिसका व्यवहार दो अर्थों में किया जाता है। एक अर्थ में समाजीकरण का तात्पर्य सामाजिक अनुकूलन से है। यहाँ समाज या सामाजिक समूह को प्रधान माना गया है तथा व्यक्ति का स्थान गौण है। इस कारण यहाँ व्यक्ति - विकास की अपेक्षा संस्कृति - पोषण पर अधिक बल दिया गया है। चैपलिन (Chaplin) ने समाजीकरण को इसी अर्थ में परिभाषित किया है - "किसी संस्कृति - विशेष की परम्पराओं, आदतों, लोकरीतियों एवं लोक प्रथाओं को सीखने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं।"

दूसरे अर्थ में समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यहाँ व्यक्तित्व - विकास पर अधिक बल दिया जाता है। सेर्ल्ड एवं बैकमैन के अनुसार "दूसरे लोगों के साथ पारस्परिक प्रतिक्रियाओं के परिणाम स्वरूप व्यक्ति के जीवन में घटित परिवर्तन की क्रिया को समाजीकरण कहते हैं।" रोजेनबर्ग एवं टरनर के अनुसार "समाजीकरण का तात्पर्य सामाजिक प्रभावों से उत्पन्न व्यक्ति के विकास या परिवर्तन की प्रक्रिया से है।"

इसप्रकार से देखते हैं कि समाजीकरण की व्याख्या के लिए दो दृष्टिकोण हैं और ये दोनों दृष्टिकोण सही हैं क्योंकि समाजीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिसकी व्याख्या किसी एक विचार से सम्भव नहीं है।

Scanned by CamScanner

Nature of Socialization —

1. समाजीकरण एक अनुकूली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने समाज या सामाजिक समूह के मूल्यों, मानदण्डों तथा विश्वासों के साथ अनुकूलन स्थापित करना सीखता है।

2. समाजीकरण व्यक्ति के विकास या परिवर्तन की प्रक्रिया है। समाजीकरण का उद्देश्य पारस्परिक प्रतिक्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति की सामाजिक मनोवृत्तियों, सामाजिक आत्मधारणा, एकात्मता तथा उनके व्यवहारों का विकास है।

3. समाजीकरण एक Continuous process है। प्रारम्भ में मनोवैज्ञानिकों का यह मानना था कि समाजीकरण की प्रक्रिया एक खास उम्र तक चलती है, उसके बाद समाप्त हो जाती है। आधुनिक शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि समाजीकरण की प्रक्रिया मरने के समय तक जारी रहता है। व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, आदर्शों को निरंतर सीखते रहता है।

4. समाजीकरण का सम्बंध समाज के मानकों एवं मूल्यों से होता है अतः इस पर समय एवं स्थान का प्रभाव पड़ता है। हम जानते हैं कि सामाजिक मानक एवं सामाजिक मूल्य में समय के साथ परिवर्तन होते रहता है अतः समय बदलने से व्यक्ति को नये बदले हुए सामाजिक मूल्य एवं मानकों को सीखना पड़ता है।

5. समाजीकरण में व्यक्ति के अहम् या self का विकास होता है। समाजीकरण में सतत अन्तःक्रिया होते रहती है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व की रचना एवं पुर्नरचना होते रहती है।

Scanned by CamScanner